Chap-8

अष्टम अध्याय

उपसंहार

'व्यंग्य' हिन्दी साहित्य की आधुनिक विधा है। हिन्दी साहित्य के आदिकाल से लेकर प्राय: स्वतंत्रतापूर्व तक के साहित्य में व्यंग्य हास्य के साथ जुड़ कर किसी न किसी रूप से प्रकट होता रहा है; किन्तु स्वतंत्रता के बाद ही वह व्यंग्य विधा के स्वतंत्र रूप में स्थापित हो पाया। प्रारंभ में व्यंग्य के शास्त्रीय रूप की चर्चा भारतीय काव्य-शास्त्र तथा भारतीय साहित्य में नहीं मिलती है। पश्चिम के विद्वानों ने व्यंग्य के स्वरूप पर स्वतंत्र विचार किया है। पश्चिमी विद्वानों ने व्यंग्य को हास्य के प्रभेद के रूप में स्वीकार करते हुए उसके शास्त्रीय स्वरूप का अध्ययन किया है।

'व्यंग्य' मूल लेटिन शब्द 'Satira' से खोजा गया है। किन्तु यह विकसित होकर अंग्रेजी के 'Satire' के रूप में आज प्रचलित है। पाश्चात्य विद्वानों ने 'Satire' के विभिन्न अर्थ बताये हैं। हिन्दी साहित्य कोश में व्यंग्य की व्युत्पत्ति 'वि + अंग' से मानी गयी है। कई भारतीय विवेचकों ने 'व्यंग्य' के लिए 'व्यंग' शब्द का प्रयोग किया है। किन्तु हिन्दी के अधिकांश व्यंग्य समीक्षकों ने 'व्यंग्य' शब्द को ही अधिक समीचीन माना हैं। पश्चात्य तथा भारतीय विद्वानों द्वारा दी गई व्यंग्य विषयक परिभाषाओं के आधार पर व्यंग्य का स्वरूप निर्धारित किया गया है। व्यंग्य गद्य अथवा पद्यमय रचना है, जो युगीन विसंगतियों को यर्थाथ के धरातल पर प्रस्तुत करता है। व्यंग्य में निहित यथार्थता, संवेदनशीलता, गम्भीरता, प्रौढ़भाषा, बौद्धिकता, सांकेतिकता और तटस्थ विश्लेषण जैसे तत्त्वों की अनिवार्यता बतायी गई है। व्यंग्यकार का मूल उद्देश्य समाज में छिपें दुराचारों का सुधार करना तथा नैतिक उत्थान का होना चाहिए। विभिन्न विवेचकों ने व्यंग्य के अनेक वर्गीकरण प्रस्तुत किये हैं। इन विद्वानो ने विषय, शैली, प्रेरणा, प्रभाव आदि के-आधार पर व्यंग्य के प्रकार निर्धारित किये हैं। वैयक्तिक व्यंग्य में आत्म व्यंग्य तथा परस्थ व्यंग्य का समावेश किया गया है; जबकि समष्टिगत व्यंग्य धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक आदि विषयों पर आधारित है। इसके अतिरिक्त कटु यर्थाथ से युक्त व्यंग्य, प्रहारात्मक व्यंग्य, हास्य युक्त व्यंग्य, करूण

व्यंग्य को व्यंग्य के प्रकार में समाविष्ट किया गया है।

हिन्दी व्यंग्य को एक स्वतंत्र एवं पूर्ण साहित्यिक विधा के रूप में स्थापने का प्रयास स्वतंत्रता के बाद ही दृष्टिगत होता है। स्वतंत्रता के बाद हिन्दी व्यंग्य ने विषय एवं शैली-शिल्पगत वैविध्य का प्रर्याप्त रूप से विस्तार किया है। हिन्दी व्यंग्य साहित्य के विविध पक्षों पर इधर-उधर शोध-कार्य को भी गति मिली है। उसके वस्तु पक्ष पर तो शोध-कार्य किए गए हैं। किन्तु भाषा-शैली तात्त्विक अनुशीलन का प्राय: अभाव ही दृष्टिगत होता है। प्रस्तुत शोध-कार्य इसी दिशा की पूर्ति का विनम्रतापूर्वक एक लधु प्रयास है।, इसमें साठोत्तर हिन्दी व्यंग्य-निबंधों में प्राप्त व्यंग्य की शैली एवं उसमें भाषिक रूप सम्बन्धित नव नव प्रयोग का ही अपने अलोच्य विषय का प्रमुख आधार बनाया गया है।

किसी भी साहित्यिक कृति का शैली वैज्ञानिक अध्ययन करने से पूर्व उसके स्वरूप का विवेचन करना अत्यंत आवश्यक है। इस प्रक्रिया को जानने तथा समझने के लिए शैली तथा शैलीविज्ञान के स्वरूप तथा परिभाषाओं का अध्ययन करना भी आवश्यक है। शैली वैज्ञानिक अध्ययन प्रक्रिया क्या है।इसके अंतर्गत किन-किन भाषिक उपकरणों का समावेश किया जाता है। इन सब की चर्चा करना जरूरी है। 'शैली' साहित्यिक भाषा का तत्त्व है। साहित्य में साहित्यकार की अभिव्यक्ति को 'शैली' की संज्ञा दी गई है। 'शैली' शब्द की व्युत्पत्ति तथा परिभाषा भारतीय काव्य शास्त्र में मिलती है। 'शैली' शब्द की व्युत्पत्ति 'शील' धातु से मानी गई है। आज ये अंग्रेजी के 'स्टाइल' (Style) के अर्थ में प्रचलित हुई है। 'शैली' साहित्यकार के विचारों को सम्प्रेषित करने का माध्यम है। ये साहित्यकार के व्यक्तित्त्व की पहचान है। शैली कलात्मक अभिव्यक्ति है। जिसे अनेक भाषिक इकाइयों पर विभाजित किया गया है। 'शैलीविज्ञान' अंग्रेजी 'Stylistics' (स्टाइलिस्टिक्स) का अनुवाद है। शैली का विश्लेषण नियम संहिता के आधार पर करना शैलीविज्ञान है तथा विशिष्ट कृतियों का शैलीगत अध्ययन व्याकरणिक नियम-संहिता के आधार पर करना शैली वैज्ञानिक अनुशीलन है। शैलीविज्ञान के संदर्भ में भाषा के विविध रूप जैसे सामान्य भाषा, साहित्य भाषा तथा व्यंग्य भाषा की परि गणना की गई है। शैली वैज्ञानिक अध्ययन के लिए शब्द-संरचना, चयन प्रक्रिया, विचलन, शब्द-शक्ति, अप्रस्तुत योजना, समानान्तरता आदि भाषिक उपकरणों का समावेश किया जाता है। शैली वैज्ञानिक अध्ययन के परिप्रेक्ष्य में व्यंग्य के भाषा-शैली विषयक

विविध रूपों को देखा परखा जा सकता है।

व्यंग्य निबंध साहित्य की बैद्धिक विधा है। जिसमें विसंगतियों का आलोचनात्मक प्रहार करना सुविधा जनक होता है। निबंध का स्वरूप संक्षिप्त होने से जन सामान्य तक निबंधकार अपने उद्देश्य को आसानी से स्पष्ट कर सकता है। हिन्दी साहित्य में निबंध का स्वरूप एवं परिभाषाएँ तथा उसकी शैली के संदर्भ नें उनेक विचार प्रस्तुत हो चुके है। परन्तु निबंधों में व्यंग्यात्मक विस्तार भारतेन्दु युग के निबंधों में अधिक मिलता है। व्यंग्य निबंध की परिभाषाओं के आधार पर इसके तत्त्व तथा प्रकार निर्धारित किये गये हैं। जो प्राय: व्यंग्य के तत्त्व और प्रकार से काफी समानता रखते हैं। यथार्थ, सत्य, कल्पना, विचार, स्वच्छन्दता, आदर्श जैसे प्रवृत्तिगत तत्त्वों व्यंग्य निबंध की आधारशीला बने हैं। इन्ही तत्त्वों के तानों-बानों से व्यंग्य निबंधों में तिव्रता तथा प्रहारात्मकता आई है। व्यंग्य निबंधों में वैयक्तिक तथा निवैयक्तिक दोनों प्रकार के निबंधों का समन्वय किया गया है।

व्यंग्य निबंधों का उद्‌भव और विकास आधुनिक काल के प्रथम चरण से ही प्रारंभ होता है। भारतेन्दु युग के पूर्व इसका स्वतंत्र अस्थित्त्व नहीं दिखाई पड़ता है। आज व्यंग्य निबंध को पारिभाषित करके इसके आधुनिक स्वरूप की चर्चा की गई है। भारतेन्दु युग में गद्य की अनेक विधाओं का विस्तार हुआ। व्यंग्य निबंधों का उद्‌गम काल हम भारतेन्दु युग कह सकते हैं। इस युग व्यंग्य निबंध साहित्य के विकास में अविच्छिन्न परम्परा का परिणाम न होकर के तत्कालीन परिस्थितियों की देन था। तत्कालीन अव्यवस्था तथा निरंकुश शासन व्यवस्था के कारण जनता मैं चेतना तथा जागृति लाने के रूप में साहित्यकारों ने व्यंग्य-निबंधों का साधन के रूप में प्रयोग किया है। भारतेन्दु युग के समय की पत्र-पत्रिकाओं ने व्यंग्य-निबंध के प्रचार-प्रसार में बड़ा सहयोग प्रदान किया है। इस युग में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, पं. बालकृष्ण भट्ट, पं. प्रतापनारायण मिश्र, पं. बदरीनाथ नारायण प्रेमधन, बालमुकुन्द गुप्त जैसे व्यंग्य निबंधकारों ने पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से व्यंग्य निबंध के विकास में योगदान दिया है। भारतेन्दु युग में व्याप्त सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था, जातिवाद, पाखंड़, कुरीतियाँ, ऊँच-नीच के भेद-भाव, कर्मकांड आदि विसंगतियाँ व्यंग्य -निबंध का विषय रही हैं। द्विवेदी युग में समाज की परिस्थिति में थोड़ा बहुत सुधार आया था। लेकिन पूर्ववर्ती युग की विसंगतियों की असर काफी कुछ थी। विसंगतियों ने भले ही विकराल रूप क्यों न

लिया हो परन्तु द्विवेदी युग के निबंधकारों ने इन्ही विसंगतियों तथा विषमताओं को व्यंग्य का लक्ष्य बनाया। इस युग में प्रकाशित 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से व्यंग्य-निबंध के विकास को वेग मिला। महावीर प्रसाद द्विवेदी, गुलेरीजी, जगन्नाथ प्रसाद, बाबू गुलाबराय आदि के निबंधों में व्यंग्य की धारा विद्यमान होती है। रामचन्द्र शुक्ल ने निबंध को गद्य की कसौटी माना है। इनके प्रयास से शुक्ल युग के व्यंग्य निबंधों में विषयों के वैविध्य के साथ भाव एवं विचारों की गहराई भी देखने को मिलती है। भाषा की परिमार्जितता तथा भावों का परिष्कार शुक्ल युग के व्यंग्य निबंधों की विशेषता रही है। स्वातंत्र्योत्तर युग में तत्कालीन परिस्थिति ने व्यंग्य के लिए उर्वरा भूमि प्रदान की है। इस युग में विसंगतियों का प्रभाव अधिक पनपा। इस युग के व्यंग्यकारों ने व्यंग्य के माध्यम से समाज में छिपी विषमताओं तथा समस्याओं को उजागर किया गया। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, अज्ञेय, प्रभाकर माचवे आदि के निबंधों में व्यंग्य का स्वर मिलता है। इस युग में बेकारी, झूठ, छल-कपट, कालाबाजारी बेईमानी, संग्राहक वृत्ति, स्वार्थपरकता, भ्रष्टाचार आदि विषयों पर अधिक व्यंग्य मिलता है। इस युग का व्यंग्य निबंध साहित्य स्वतंत्र रूप से अपनी पहचान बना पाता है।

आधुनिक युग से स्वातंत्र्योत्तर युग तक व्यंग्य निबंध अपना साहित्यिक रूप प्राप्त कर चुका था। साठोत्तर युग में व्यंग्य निबंधों विषय के साथ इसके शैली पक्ष में भी अधिक परिवर्तन देखने को मिलता है। निरन्तर बढ़ती हुई परिस्थितियों ने व्यंग्य निबंध को अधिक विकसित किया है। हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, रवीन्द्रनाथ त्यागी, लतीफ घोंघी, श्रीलाल शुक्ल, सुदर्शन मजीठिया, शंकर पुणताम्बेकर, बरसानेलाल चतुर्वेदी, प्रेम जनमेजय, बालेन्दुशेखर तिवारी, रोशनलाल सुरीरवाला..... जैसे व्यंग्यकारों ने साठोत्तर व्यंग्य निबंध साहित्य की नीव को मजबूत किया है। इस युग में राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि विषयों के अतिरिक्त आत्मस्थ एवं परस्थ व्यंग्य मानवता पोषक तथा जीवन के सही मूल्यों की रक्षा तथा विकास करता दृष्टिगत होता है। साठोत्तर हिन्दी व्यंग्य निबंध सहित्य समकालीन नैतिक ह्रास, मूल्य ह्रास तथा मूल्य विहीन मानवता के अनेक कोणों को रेखांकित कर सका है। इस युग के व्यंग्य निबंधों में विषय तथा प्रवृत्तिगत विकास के साथ शैलीगत विकास भी देखने को मिलता है। साठोत्तर युग के व्यंग्यकारों ने यर्थाथ के धरातल पर व्यंग्य का चित्रण करके विषय तथा शैली

पक्ष पर व्यंग्य निबंध के विकास का प्रगति-पथ अग्रसर किया है। साठोत्तर युग के व्यंग्य निबंधों में योगदान देनेवाले जिन व्यंग्यकारों का नामोल्लेख तृतीय अध्याय के अंतर्गत किया गया है इसके अतिरिक्त भी अन्य व्यंग्यकार वे हैं जिन्होंने व्यंग्य की परंपरा को विकसित किया है तथा जिनके व्यंग्य निबंधों में शैली-शिल्पगत नवीनता उपलब्ध होती है।

अरविन्द तिवारी [चुनाव टिकट और ब्राह्मणी (1991), दीवार पर लोकतंत्र (1993)]; आजाद रामपुरी [मान न मान मैं तेरा मेहमान (1988)]; अजय बाजपेयी (दिन फिरने वाले हैं (1993)]; आलोक चराटे [साहब का टेलिफोन (1985)]; अजीज नेसिन [कुत्ते की दुम (1982)]; आत्माराम [जब्र मैं लिखता हूँ (1993)]; देवेन्द्र भारद्वाज [चाचा चक्कलस का क्रिकेट चक्कर (1988)]; फिक्र तौसवी [बदनाम किताब (1977), राजा राज करे]; गौरीशंकर राजहंस [बूथ बहादूर की जय (1990), प्रेतात्मा बिकाऊ है (1993), प्रैक्टिस पालिटिक्स की (1994)]; गिरिराज शरण अग्रवाल [डाक्टरी मुसीबत (1990), बाबू झोलानाथ (1994), श्रेष्ठ हास्य -व्यंग्य रचनाएँ]; गिरीश पंकज [ट्यूशन शरणम् गच्छामि (1993), भ्रष्टाचार विकास प्राधिकरण (1994)]; घनश्याम अग्रवाल [हँसी घर के आइने (1990)]; गोपाल कृष्ण कौल [कांटो की खूशबू]; गजेन्द्र तिवारी [जलने वाला जला करें]; हरिश नवल [बागपत के खरजूबे (1987)]; हरमन चौहाण [पूत के पाँव, पड़ पाखंड़ प्रदेश की हंसा चुगै कंकड़]; जवाहर चौधरी [नाक के बहाने (1989), सूखे का मंगलगान (1991), माननीय सभासदो], जगमुन्दिर तायल [किस्सा पांचवे दरवेश का]; कृष्ण चराटे [मेरे मुहल्ले का सूर्योदय (1982), मुस्कराते चेहरे (1989)]; कुंदन सिंह परिहार [अतरात्मा का उपद्रव, बानगी(संपादित)]; कस्तुरी दिनेश [मुफ़्त का चन्दन लगा मेरे नन्दन (1992), कटी हुई नाक (1994)]; श्रीकृष्ण मायूस [भ्रष्टाचार और हम (1984), तलाश तीसरे हाथी की (1991)]; डॉ. केलकर [कुत्ते की दूम], कृष्णेश्वर डींगर [अपने अपने इरादे]; महावीर अग्रवाल [लालबत्ती जल रही है (1989), गधे पर सवार इक्कीसवीं सदी (1993)]; मुद्राराक्षक [मथुरदास की डायरी (1992)]; एम. उपेन्द्र [राजधानी के हनुमान, मुख्यमंत्री का वारिस (1991)]; निशिकांत [अब फाइलें नहीं रूकती (1990), दस्ताने दफ्तर)]; निरज व्यास [नैतिकता का त्यागपत्र, भरे पेट का चिन्तन]; प्रदीप पंत [मैं गुटनिरपेक्ष (1976), प्राइवेट सेक्टर का व्यंग्यकार (1982), मीडिया घर होने के मज़े (1990), सच के बहाने]; पारूकान्त देसाई [कबीरा खड़ा बाज़ार में (1981)];

रासबिहारी पांडेय [उधार का भाषण (1978), स्पीकर क्रांत्ति (1979), काका के जूते (1979), तीसरी आँख (1992), कटपीस (1993)]; रामनारायण सिंह 'मधुर' [खुशहालचन्द का चुनाव (1990), लक्ष्मी नंबर दो (1991), हिन्दी के प्रतिनिधि व्यंग्य (1991)], रामशंकर श्रीवास्तव [हल्ला मचाओ गर्दन मचाओ (1980), सावधान ये मेहमान है (1989), इंडिया गेट की बकरी]; रमेश गुप्त [गिरगिट (1987), नेताजी की उदासी]; रामअवतार सिंह सिसौदिया [सेवा गॉड़ फाधर की, समय के हस्ताक्षर, बनाम निशानी अंगूठा, त्राहि त्राहि त्राहिमाम]; रामकुमार भ्रमर [कहे कबीरा (1992), चेहरे और चेहरे]; राजकुमार गौतम [वरंच, अँगरेजी की रँगरेजी]; संतोष दीक्षित [करील के कांटे (1989), खादी में खटमल, मैं भी एक मनीषी हूँ]; श्रीराम ठाकुर 'दादा' [अभीमन्यू का सत्ता व्यूह (1977), ऐसा भी होता है (1978), पर्स, पिल्ला और पति (1991)]; सुरेश कांत [पड़ोसियों का दर्द (1984), बलिहारी गुरू (1988), अफसर गण बिदेश, मैनेजमेंट नामा 'ब' से बैंक]; शेरजग जांगली [नेताजी का चमचा, बीस पौण्ड का नोट]; शिवानंद कामड़े [इन्टरव्यू के चौंचले (1984), विधवा सहानुभूति (1985), भ्रष्टाचार की बुनियाद, एण्ड सन्स की परम्परा]; सुरेश कालरा [पाकीजा तेरी पालकी (1988), चमचे का ढक्कन, हँसी हाजिर हो (1990)]; शंकरलाल मीणा [कब्र हमारी मुर्दा आपका (1989), जिन्दाबाद मुर्दाबाद (1992)]; शिव शर्मा [जब ईश्वर नंगा हो गया (1978), शिव शर्मा के चुने हुए व्यंग्य (1993)]; शरदेंदु [हम हड़ताली जनम के (1983), चम्पतलालजी]; उपेन्द्रप्रसाद राय [तराजू पर आत्माराम, रोटी का सलीब]; विवेकी राय [मन बोधमास्टर की डायरी, फिर बैतलवा जल पर, जुलूस रूका है, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ]; विश्वमोहन माथुर [मेरा इक्कीसवा मकान (1984), क्षमा याचना सहित]; विजय अग्रवाल [कुड़ेदान की आत्मकथा (1994), अपनी हिन्दी सुधारे, राजनीति में रोमांस]; विश्वमोहन देवलियाँ [राग युनियन कार्बाइड़]; विश्वमोहन माथुर [मेरा इक्किसवाँ मकान (1984)] आदि इसी प्रकार के व्यंग्य निबंधकार है।

महिला व्यंग्यकारों ने भी व्यंग्य निबंध को शैली-शिल्प कौशलगत नये आयाम दिए हैं।

कुसुम गुप्ता [तहलका (1984)]; स्नेहलता पाठक [द्रोपदी का सफरनामा (1991), प्रजातन्त्र के घाट पर (1994)]; सरोजनी प्रितम [आखिरी स्वयंवर]; उषाबाला [युधिष्ठिर के कुत्ते (1980), कफनचोर का बेटा] आदि इसी कोटि की

व्यंग्य लेखिकाएँ हैं।

इस शोध प्रबंध में साठोत्तर हिन्दी व्यंग्य निबंध साहित्य का भाषा एवं शैली वैज्ञानिक अनुशोलन किया गया है। चतुर्थ से सप्तम अध्यायों में इस अध्ययन प्रक्रिया की संपूर्ण चर्चा उदाहरणों के साथ की गई है। किसी भी कृति के शैली वैज्ञानिक अध्ययन से पूर्व व्याकरणिक उपकरणों तथा भाषा की चयन प्रक्रिया को समझना आवश्यक है। निबंध का स्वरूप संक्षिप्त होता है। इसमें गागर में सागर भरने की प्रवृत्ति विद्यमान रहती है। थोड़े से शब्दों में बहुत कुछ कहना आवश्यक होता है। इसीलिए व्यंग्य निबंधों में व्यंग्यकारों ने मुहावरें, कहावतें, सूक्ति, परिभाषा, चयन सम्बन्धित अनेकश: नये नये प्रयोग किये हैं। उक्त प्रयोग वैविध्य के कारण व्यंग्य निबंधों के कथ्य को सम्प्रेषित एवं प्रभावोत्पादक नये-नये तेवरों से अभिमण्डित करने का प्रयास व्यंग्य निबंधकारों ने किया है। फलत: उसके स्वरूप में चमत्कृति प्रधान अर्थ व्यंजक नई-नई शैल्पिक चेतना का विस्तार हो पाया है। व्यंग्यकारों ने अपने व्यंग्य निबंधों में विविध प्रकार की भाषा के शब्दों का प्रयोग भी व्यंग्य के शिल्प के निखार के लिए किया है। इस दृष्टि से संस्कृत निष्ठ तत्सम शब्द, विदेशी शब्द, ग्राम्य शब्द, अपशब्द, नवनिर्मित या व्यंग्यज शब्दों से सम्बन्धित चयन-प्रकृति को देखा जा सकता है। दो भाषा के शब्दों के योग से व्यंग्यज शब्दों का निर्माण किया गया है। अंग्रेजी तथा हिन्दी शब्दों में उपसर्ग, प्रत्यय, कारक, विशेषण, क्रिया विशेषण, बहुवचन, लिंग आदि लगाकर नवनिर्मित शब्दों का निर्माण किया गया है।

शब्द-शक्ति भाषा का अर्थमूलक उपकरण है। शब्द की सार्थकता उसके अर्थ में ही निहित है। जिस सम्बन्ध या व्यापार के माध्यम से शब्द के निश्चित अर्थ का बोध होता है, उसे शब्द-शक्ति कहते है। व्यंग्य निबंधों में अभिधा, लक्षणा तथा व्यंजना आदि शब्द-शक्तियों का यथास्थान प्रयोग मिलता है। इस प्रयोग से व्यंग्य प्रहारात्मक तथा प्रभावकारी बन सकता है। बहुशब्दीय अभिव्यक्ति को एक शब्दीय स्वरूप में व्यक्त करने के लिए व्यंग्य निबंधों में विचलन का सहारा लिया गया है। 'विचलन' शैली वैज्ञानिक एक महत्त्वपूर्ण अंग है। व्याकरणिक नियमों के उलंघन के स्तर पर विचलन के अनेक रूप मिलते हैं। सहप्रयोग विचलन, साहित्येत्तर शब्दों के रूप में विचलन, पदक्रम विचलन, अन्विति के स्तर पर विचलन जैसे अनेक रूपों की सुंदर प्रस्तुतियों के दर्शन व्यंग्य निबंधों में होते है।

व्यंग्य निबंधों में भाव व्यंजक छवि प्रदान करने के लिए व्यंग्यकारों ने समानान्तरता के अनेक प्रयोग किये हैं। समानान्तरता के विभिन्न भेद जैसे समशब्दीय आवृत्ति, समवाक्यांशीय आवृत्ति, समवाक्यीय आवृत्ति, समानान्तर वाक्यांश, समानान्तर वाक्य, आर्थीय समानान्तरता, निरर्थक आवृत्ति मूलक शब्दीय समानान्तरता आदि का प्रयोग साठोत्तर हिन्दी व्यंग्य निबंधों में मिलता है। ये समानान्तरता दो समान अथवा विरोधपरक भाषिक इकाइयों को एक साथ प्रस्तुत करती है। इसके प्रयोग से व्यंग्य-निबंध के कला-पक्ष को समृद्ध किया गया है। शैली वैज्ञानिक अध्ययन की दृष्टि से अप्रस्तुत विधान महत्त्वपूर्ण अर्थमूलक शैलीय उपकरण है। अप्रस्तुत विधान दो प्रकार के हैं। रचनात्मक अप्रस्तुत विधान तथा बिम्बात्मक अप्रस्तुत विधान। रचनात्मक अप्रस्तुत विधान विशेषण, क्रिया विशेषण, संज्ञा आदि के रूप में प्रस्तुत किया गया है। जबकि बिम्बात्मक अप्रस्तुत विधान मुख्यत: विभिन्न अलंकार जैसे उपमा, रूपक, व्याज-स्तुति, अपकर्ष, मानवीयकरण, उत्प्रेक्षा आदि के द्वारा प्रस्तुत होता है। इसलिए इसे अलंकार का समानार्थी माना जाता है। अप्रस्तुत विधान में अप्रस्तुत गौण तथा प्रस्तुत मुख्य होता है। व्यंग्य निबंधों में अप्रस्तुत का कार्य प्रस्तुत की प्रहारात्म शक्ति को बढ़ावा देता है। यानी की प्रस्तुत की अभीव्यक्ति को अप्रस्तुत अभिव्यंजित करता है। यह साहित्यिक भाषा का सौन्दर्यमूलक उपकरण है। विभिन्न व्यंग्यकारों ने व्यंग्य को व्यंजित करने के लिए इसका प्रयोग किया है।

व्यंग्य निबंधों में शैली प्रयोग की काई सीमा नहीं है।यही कारण है कि इसमें शैलियों की विविधता मिलती है। विसंगतियों का निरूपण करने तथा भाव एवं विचारों को संप्रेषित करने के लिए शैली ही सशक्त माध्यम है। वर्णनात्माक शैली, संवाद शैली, प्रतीकात्मक शैली, मिथकीय शैली, फंतासी शैली, प्रश्नोत्तर शैली, पत्र शैली, भाषण शैली, आलोचनात्मक शैली, इन्टरव्यू शैली आदि शैलियों के अतिरिक्त अन्य शैलियों का प्रयोग व्यंग्य निबंधों में मिलता है। व्यंग्य निबंधों में समकालीन परिस्थिति तथा विषमताओं को चित्रित करने के लिए शैली का वैविध्य मूलक विस्तार हुआ है।

व्यंग्य निबंधों में प्रयुक्त विभिन्न भाषिक उपकरणों का चयन, शब्द-शक्ति, विचलन प्रयोग, समानान्तरता, अप्रस्तुत योजना तथा विविध शैलीय प्रयोग की प्रक्रिया को पारिभाषिक करके उसके स्वरूप की चर्चा उदाहरणों के साथ इस

शोध-प्रबंध में की गई है।

अत: निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि व्यंग्य निबंध का भविष्य बहुत ही उज्जवल है। व्यंग्यकारों ने धर्म, समाज, राजनीति, व्यक्तिपरक जीवन आदि का लेखा-जोखा व्यंग्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है। जीवन तथा जगत से प्राप्त परिस्थितिजन्य अनुभवों को व्यंग्य निबंधों के विषय के रूप में प्रस्तुत किया गया है। व्यंग्य का निखार तथा प्रहारात्मक स्वरूप निबंधों में ही मिलता है। इसलिए इसमें शिल्प पक्ष की प्रधानता रहती है।

आज व्यंग्य एक ज्वालामुखी की तरह हर तरफ फूटता नज़र आया है। व्यंग्य एक विधा के रूप में मुखरित हुआ है। व्यंग्यकार अपनी प्रभावी अनुभूतियों को व्यंग्य के माध्यम से प्रस्तुत करता है। आज व्यंग्य का कथ्य तथा शिल्प-पक्ष विशाल धरातल पर सामने आया है। इसमें कोई सीमित मर्यादा नहीं है।